रोसनी पटुके करी अवकास में, चरन भूखन जामें इजार झांई।
कहें महामती मोमिन रूह दिल को, मासूक खैंचें तोहे अर्स मांहीं।। ५ ।।

कमर में बंधे पटके की रोशनी आसमान तक जाती है। चरणों के आभूषण तथा सफेद जामा के नीचे इजार (चूड़ीदार पैजामा) झलकता है। श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों के दिलों को श्री राजजी महाराज की ऐसी शोभा परमधाम में खींचती है।

॥ प्रकरण ॥ ११२ ॥ चौपाई ॥ १६८० ॥

चतुर चौकस चेतन अति चोपसों, कूवत कर सब अंग कमर कसे।
सुंदर सेज्या सनकूल तन रूह रची, मासूक दिल मोमिन मोहोल माहें बसे।। १ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप देखने में चतुर, चौकस, जागृत हैं। वह बड़े खुशहाल हैं। उनका अंग-अंग मस्ती से भरा दिखाई देता है। उनके ऐसे सुन्दर स्वरूप के लिए मोमिनों ने अपनी आत्मा के हृदय की सुन्दर सेज बिछा रखी है और माशूक श्री राजजी महाराज अपने महल, अर्थात् मोमिन के दिल में रहते हैं।

मन तन जोबन चढ़ता नौतन, आया अमरद आसिक इस्क गंज ले।
अधुर अमृत मुख दंत रसना रस, नित नए सुंदर सब देखे चढ़ते।। २ ।।

उनके मन में तथा तन में चढ़ती हुई नई जवानी है। ऐसे किशोर स्वरूप आशिक श्री राजजी महाराज इश्क का प्याला लेकर मोमिनों के दिल में आए हैं। उनके होठों का अमृत-रस तथा मुख के अन्दर दांत और जिह्वा का रस प्रतिदिन नया-नया होता नजर आता है।

निलवट बंके नैन नासिका श्रवन, कौल फैल हाल नित नवले देखाए।
रूह भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मह हो जाए।। ३ ।।

मस्तक, बांके नेत्र, सुन्दर नासिका और कान तथा उनकी रसीली वाणी, प्रेम मयी लीला और अखण्ड सत्ता के रूप नित्य नए-नए दिखाई देते हैं। मोमिनों की आत्माएं भी आनन्द में विभोर होकर चंचल और चपल चाल से श्री राजजी महाराज की मोहिनी छवि से मोहित होकर उसी में एक रूप हो जाती हैं।

भाखती महामती अर्स रूहें उमती, पूरन कर प्रीत प्रेमें पोहोंचाई।
अर्स वाहेदत खिलवत खसम की, हुज्जत निसबत लिए इत आई।। ४ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे परमधाम की रूहो! तुम अर्श की उम्मत हो, इसलिए तुम श्री राजजी महाराज से पूर्ण प्रेम करो। प्रेम प्रीति से ही तुम घर पहुंचोगे। तुम श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावे में बैठी हो और उसी निसबत की हुज्जत लेकर यहां आई हो।

॥ प्रकरण ॥ ११३ ॥ चौपाई ॥ १६८४ ॥

नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर।
नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर।। १ ।।

श्री राजजी महाराज का नूरमयी स्वरूप बड़ा सुन्दर है। उनके नेत्र, मस्तक, नासिका, कान, लाल गाल, मुखारबिन्द, हरवटी और होठों में सब नूर ही नूर झलक रहा है।

नूर मुख चौक मांडनी अति नूर में, नूर वस्तर नूर भूखन जहूर।
नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंगों उद्दोत नूर पूर।। २ ।।

उनका चेहरा (मुखारबिन्द) अति नूरमयी है और नूर के ही वस्त्र-आभूषण शोभायमान हैं। उनका नूरमयी यौवन स्वरूप नित्य नया दिखाई देता है। उनके सब अंग नूर से भरपूर हैं।

Nijanand App

नूर चरन कमल नूर हस्तक, नूर सोभा सबे नूर सिनगार।
नूर सिर पाग नूर कलंगी दुगदुगी, नूर हिये हार नूर गंज अंबार।। ३ ।।

उनके चरण कमल और हाथ नूरमयी हैं और नूर का ही सब सिनगार है। उनके सिर के ऊपर पाग, पाग में लगी कलंगी और दुगदुगी, सब नूर की हैं। उनके गले के ऊपर हीरे के हार की शोभा अति नूरमयी है।

नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूर का सूर।
सब नूर रूहें नूर हादी नूर में, नूर नूर में खैंच लई हकें हजूर।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज की बातें नूरी हैं। महामति के विचार का विचार भी नूरी है। यह अखण्ड परमधाम के नूर का सूर्य उदय हुआ है जहां परमधाम सब नूरमयी है। श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टियां सब नूर की हैं। अब इस तरह से श्री राजजी महाराज जी स्वयं ही नूर के स्वरूप हैं। उन्होंने इन सबको खींच कर अपने नूर में मिला लिया है।

।। प्रकरण ।। ११४ ।। चौपाई ।। १६८८ ।।

हुब मेहेबूब की आसिक प्यास ले, चाहे साफ सराब सुराई सका।
पीवते पीवते पिउ के प्याले सों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका।। १ ।।

अपने प्रेम भरे माशूक (राजजी महाराज) की मिलने की प्यास लेकर आशिक रूहें, अपने साकी (श्री राजजी महाराज) की सुराही से इश्क की शराब पीना चाहती हैं। श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले को पीकर मैं उसके अखण्ड नशे में गर्क हो गई।

दिल परस सरस भयो अर्स इलाही, दोऊ चुभ रहे दिल सों दिल मिल।
न्यारी ना होए प्यारी आप मारी, चल विचल ना होए वाहेदत असल।। २ ।।

श्री राजजी की मस्ती का प्याला (दिल) छूने मात्र से मेरा दिल श्री राजजी महाराज का अर्श बन गया। मेरा और उनका दिल दोनों हिल-मिलकर एक हो गए। ऐसी श्री राजजी महाराज के इश्क में डूबी आत्मा अब उनसे अलग नहीं हो सकती। अब वह अपने असल अखण्ड वाहेदत में मिल गई है जहां से वह अब हिल भी नहीं सकती।

लगी सो लगी आतम अंदर लगी, यों अंतर आतम जगी जुदी न होए।
सरभर भई पर आतम यों कर, यों तेहे दिली मिली छोड़ सके न कोए।। ३ ।।

आत्मा के अन्दर प्रीतम के विरह की चोट ऐसी लगी कि अन्दर सोई हुई आत्मा जाग उठी। अब उसे कोई अलग नहीं कर सकता। अब आतम और परआतम दोनों एक रस हो गई हैं और दोनों की एक दिली ऐसी हो गई है कि वह अब अलग नहीं हो सकती।

महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहोल मासूक का मेरे दिल मांहीं।
एक अव्वल बीच आई सो एक हुई, आखिर एक का एक मोहोल बीच और नाहीं।। ४ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि ऐसे श्री राजजी महाराज के चरण अब एक क्षण के लिए भी नहीं छूट सकते, क्योंकि मेरे माशूक का घर मेरा दिल हो गया है। हम पहले भी परमधाम में एक थे। बीच में बृज-रास में आकर एक हुए और अब आखिर में हम दोनों एक हो गए। अब बीच में और कोई नहीं है।

।। प्रकरण ।। ११५ ।। चौपाई ।। १६९२ ।।

Nijanand App